छठवाँ अध्याय

अलक्ष्मी का कथानक

ऋषिगण बोले

हे रोमहर्षण! बुद्धिमान और देवताओं के स्वामी विष्णु की माया को हम लोगों ने सुना। देवेश विष्णु से दुर्भाग्य की देवी ज्येष्ठा कैसे उत्पन्न हुई? यह आप हम लोगों को बताएँ।

सूत बोले

सृष्टि की उत्पत्ति के क्रम में भगवान विष्णु जिनका न आदि है न अन्त और जो विश्व के स्वामी हैं, उन्होंने जगत को दो पर्तों में बनाया। एक सेट में ब्राह्मणों, वेदों, वैदिक गुणों और पद्मा श्री की रचना की। विश्व के शरण दाता विष्णु ने दूसरे सेट में ज्येष्ठा अलक्ष्मी और वैदिक वातावरण से अलग लोगों और पाप को बनाया। अलक्ष्मी की रचना के बाद विष्णु ने पद्मा को बनाया। इसलिए अलक्ष्मी ज्येष्ठा (उससे बड़ी) हैं। भयानक विष के बाद अमृत के निकलने के बाद असुरा ज्येष्ठा पैदा हुई। ऐसा सुना जाता है। उसके बाद श्री पद्मा (लक्ष्मी) उत्पन्न हुई जो बाद में विष्णु की पत्नी बनीं।।१-७।। एक ब्राह्मण मुनि दुःसह ने उस अशुभ ज्येष्ठा को मानसिक रूप से अधिष्ठित देखकर उससे विवाह किया। उसके साथ प्रसन्न वह मुनि संसार के चारों ओर घूमने लगा। हे ब्राह्मणों! जहाँ कहीं भी महान् आत्मा विष्णु और शिव के नामों की उच्चस्वर में ध्वनि हो, जहाँ वैदिक मन्त्रों

के उच्च उच्चारण की ध्वनि हो, जहाँ यज्ञों से धुआँ उठ रहा हो और जहाँ लोग अपने शरीर के अंगों पर भस्म चुपड़े हुए हों, वह दुर्भाग्य की देवी हद से ज्यादा डर जाती थी। वह अपने कानों को मूँद लेती थी और इधर-उधर भागने लगती थी। ज्येष्ठा का इस प्रकार व्यवहार देखकर मुनि दुःसह भ्रम में पड़ गये। उसको साथ लेकर वह वन में चले गये। उस भयानक वन में उन्होंने बड़ी तपस्या की। ज्येष्ठा ने कहा, "मैं तपस्या नहीं करूँगी।" और वह एक घर से दूसरे घर को घूमने भटकने लगी। पवित्र मुनि, अग्रणी योगी योगाभ्यास करने लगे। उन्होंने महात्मा मार्कण्डेय को अपनी ओर आते हुए देखा। महामुनि को प्रणाम करके दुःसह ने कहा।।८-१४।।
"हे महामुनि! मेरी यह पत्नी मेरे साथ किसी भी तरह नहीं रहती है। हे ब्राह्मण मुनि! इस स्त्री को लेकर मैं क्या करूँगा? कहाँ मैं प्रवेश करूँगा? और कहाँ प्रवेश नहीं करूँगा?

मार्कण्डेय बोले

हे दुःसह! सुनो, "यह अशुभ स्त्री ऐसी प्रत्येक जगह अकीर्ति (बदनाम), अलक्ष्मी (अभागी), अतुला (न तुलना करने योग्य) और ज्येष्ठा (सबसे बड़ी) कही जाती है। यह किसी भी प्रकार उन स्थानों में प्रवेश नहीं करेगी जहाँ कि उत्तम आत्माओं, विष्णु के भक्त, वैदिक मार्ग के अनुयायी और रुद्र के भक्त जो कि अपने शरीर में भस्म लगाये हुए उपस्थित हों।।१५-१८।। यह किसी प्रकार उद्यानों में, गोशालाओं और प्रसन्न ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों औद शूद्रों के पास या उनके घरों में प्रवेश नहीं करेगी। जो लोग ओं नारायण, ओं ऋषिकेश, ओं पुण्डरीकाक्ष, ओं माधव, ओं अच्युत, ओं अनन्त, ओं आनन्द, ओं गोविन्द, ओं वासुदेव, ओं जनार्दन, ओं

रुद्र, ओं रुद्र, शिव को नमस्कार, शिवतर को, शंकर को नमस्कार, ओं महादेव, ओं उमापति, ओं सोने की भुजाधारी। ओं वृषध्वज, ओं नृसिंह, ओं वामन, ओं अतुलनीय, ओं माधव इन नामों का उच्चारण करते और इनकी स्तुति कहते हों।।१९-२३।। विष्णु का चक्र जो कि ज्वाला की समूह से बहुत काल कराल है और हजारों सूर्य के समान है, ऐसा उग्र चक्र उनके अशुभों को सदा नष्ट करता है।।२४।। जिस घर में स्वाहाकार और वषट्कार होता हो, जहाँ शिव के लिंग की पूजा होती हो और जहाँ वासुदेव की पूजा में लोग लीन हों उस घर को छोड़ देना। जहाँ उच्च स्वर से सामवेद के मन्त्रों का उच्चारण होता हो और जहाँ वैदिक प्रार्थनाओं को दोहराने में लोग लगे हों और प्रतिदिन के धार्मिक कृत्य में लीन हों तथा वासुदेव की पूजा में लीन हों, उन घरों को दूर से ही छोड़ देना।।२५-२६।। जहाँ पर अग्नि होम कार्य पूरा किया जाता हो, जहाँ लिंग की पूजा होती हो, और जहाँ पर वासुदेव की मूर्ति हो या चण्डिका विराजमान हों, उन घरों को बचा देना। पापों से दूर रहने वाले लोगों को भी तरह दे देना। लोग जो कि नित्य और नैमित्तिक यज्ञ द्वारा महेश्वर की पूजा करते हों। हे दुःसह! इस स्त्री के साथ वहाँ न जाकर कहीं और जगह जाना। जिन लोगों के द्वारा वेद पढ़े जाते हों, गायों, गुरुओं और अतिथियों और रुद्र भक्तों की नित्य पूजा की जाती हो उन लोगों को छोड़ देना चाहिए।।२७-२९।।

दुःसह ने कहा

हे मुनिश्रेष्ठ! जहाँ पर मेरा प्रवेश उचित हो और मैं निडर होकर वहाँ प्रवेश कर सकूँ, उन स्थानों को बताइए।।३०।।

मार्कण्डेय ने कहा

अपनी पत्नी के साथ निडर होकर वहाँ प्रवेश कर सकोगे जिस घर में पति और पत्नी आपस में विरोधी हों और जहाँ कि वैदिक गीतों में पारंगत ब्राह्मण, गायें, और अतिथि जहाँ पर कभी भी उपस्थित न होते हों, जहाँ

देवताओं के देवता तीनों लोकों के स्वामी महेश्वर की निन्दा होती हो, उस स्थान पर तुम रंच मात्र भय के बिना प्रवेश करना। अपनी पत्नी के साथ उन घरों में बेहिचक प्रवेश करना। जहाँ वासुदेव की भक्ति न हो, जहाँ सदाशिव उपस्थित न हों, जय होम आदि न किये जाते हों, जिस घर में भस्म न रखी जाती हो, पर्वों पर विशेष रूप से चतुर्दशी और अष्टमी (कृष्ण पक्ष की) में रुद्र की पूजा न की जाती हो, जिन घरों में प्रातः और सायंकाल ब्राह्मण लोग संध्या न करते हों, जहाँ वे चतुर्दशी तिथि को महादेव की पूजा न करते हों। जहाँ पर विष्णु के नामों से लोग रहित हों, जहाँ दुष्ट लोग सम्पर्क रखते हों, वहाँ पर अपनी पत्नी के साथ निरन्तर प्रवेश करो। जहाँ ब्राह्मण लोग दुष्ट हों और कृष्ण को नमस्कार, शिव को नमस्कार, सर्व को नमस्कार, परमेष्ठी को नमस्कार ये मन्त्र न दोहराते हों।।३१-३७।। अपनी पत्नी के पास तुम उन स्थानों में प्रवेश करो जहाँ वेद मन्त्रों का उच्च स्वर से पाठ न होता हो, जहाँ गुरुओं की पूजा न होती हो, और जहाँ लोग पितृकर्म न करते हों।।३८।। इस महिला के साथ निडर होकर सदा प्रवेश करना जिन घरों में हर रात आपस में लोगों में कलह होता हो।।३९।। जहाँ पर लिंग की पूजा न होती हो, जहाँ जप न किया जाता हो और रुद्र की भक्ति जहाँ निन्दित हो, वहाँ निर्भीकता से प्रवेश करना।।४०।। वहाँ अपनी पत्नी के साथ उस घर में प्रवेश करना जहाँ पर अतिथि, श्रोत्रिय ब्राह्मण, गुरु, वैष्णव और गायें उपस्थित न हो।।४१।। तुम प्रसन्नतापूर्वक अपनी पत्नी के साथ उस स्थान में प्रवेश करना जहाँ खाने पीने की चीजों को लोग पाने के लिए निहारते हुए बच्चों को न देकर स्वयं खाते हों।।४२।। जहाँ पर महादेव की पूजा न करके, विधिपूर्वक हवन न करके, लोग रहते हों, वहाँ पर तुम प्रवेश करना।।४३।। जहाँ लोग पापमय क्रिया-कलापों में लगे हुए हों, लोग निर्दयी हों, आपस में सद्भावना न रखते हों, उस घर और देश में तुम प्रवेश करना।।४४।। उस घर में पहुँचना जहाँ घरवालियाँ

अपने घरों को साफ-सुथरा न रखती हों, जो घर और जिसकी चाहारदिवारी गिरी हो और जहाँ स्त्रियाँ प्रशंसा की पात्र न हों, वहाँ सदा प्रसन्न मन से ठहरना।।४५।। जहाँ पर काँटेदार पेड़ हों, जहाँ पावटा नामक लता हो, जहाँ ब्रह्म वृक्ष (पलाश) हो। अगर घर के भीतर अगस्त्य, मदार, बन्धुजीव, मल्लिका, कन्या लता, तगर, द्रोही (नीम की एक जाति), जटामासी, नील, काला केला, ताल, तमाल, भेल, तित्तिडीखण्ड, करवीर, कदंब, रवादिर, बरगद, पीपल, आम, गूलर, कटहल, नीम में कौओं के घोंसले, नीम का पेड़ घर में या पार्क में, दण्डिनी और मुण्डिनी हों।।४६-५१।। जिस घर में अकेली एक दासी (नौकरानी) हो, जहाँ पर तीन गायें, पाँच घोड़े, पाँच हाथियाँ हो, वहाँ तुम अपनी पत्नी के साथ प्रवेश करो। जिस घर में काली देवी के रूप में हो, डाकिनी प्रेत के रूप में हो और जहाँ क्षेत्रपाल (पवित्र केन्द्रों के अभिभावक) जिस घर में बौद्ध भिक्षुओं की मूर्ति या बुद्ध की मूर्ति हो, वहाँ पर बेखटके प्रवेश करो। जिन घरों में सोने के लिए जाते समय, आसन पर बैठते समय, इधर-उधर अपने कामों में लगे रहते समय, जैसे—भोजन करते समय विष्णु का नाम न लिया जाय, वे घर तुम्हारे ही हैं। उनमें तुम सपत्नीक प्रवेश करो।।५२-५६।। जहाँ लोग पाखण्ड आचार में लगे हों और श्रौत और स्मार्त कार्यों को छोड़ दिये हों, विष्णु की भक्ति न करते हों और महादेव के निंदक हों, जहाँ पर नास्तिक और मूर्ख हों, वहाँ पर अपनी पत्नी सहित प्रवेश करो। जो लोग पिनाकधारी शिव को सब से अधिक न मानते हीं और उनको साधारण मूर्ति की तरह समझते हों। वहाँ पर सपत्नीक प्रवेश करो। वे जो केवल ब्रह्म को, विष्णु

और देवताओं के शासक इन्द्र को यह न मानते हो कि ये रुद्र की कृपा से उत्पन्न हुए हों, मूढ़ लोग ये कहते हैं कि भगवान् विष्णु, इन्द्र, शिव के बराबर हैं, जो जुगुनू और सूर्य दोनों बराबर मानते हों। यहाँ तक कि उनके घर सब प्रकार से समृद्ध भी हैं, तब भी वहाँ बिना डर के अपनी पत्नी के साथ प्रवेश करो और मौज करो।।५७-६१।। उन मूर्ख लोगों के आवास में प्रवेश करो जो पकाये गये भोजन को स्वयं खाते हों तथा जो स्नान और मंगल कार्य से रहित हैं। उनके घरों में प्रवेश करो। उस घर में प्रवेश करो जहाँ स्त्री स्वच्छता की आदतों और देह के संस्कार से रहित हो या जो सब प्रकार अभक्ष्य प्रदार्थ को खाने में लगी हो। उसके घर में प्रवेश करो जिसके मुँह गन्दे हों, जो गन्दे वस्त्र पहनते हों, जिनके दाँत गन्दे हों, ऐसे गृहस्थों के घर में प्रवेश करो। जो अपने घरों को भलीभाँति न धोते हों, संध्याकाल में सोते हों और संध्या के समय भोजन करते हों, इनके घरों में प्रवेश करो।।६२-६५।।

जो लोग बहुत आहारी हों, अधिक पियक्कड़ हों, जो मूर्खता से जुआ खेलने में लगे हों और बकवासी हों, व्यर्थ वाद-विवाद करते हों, उनके घरों में प्रवेश करो। उन लोगों के घरों में प्रवेश करो जो ब्राह्मणों के धन का अपहरण करते हों। जो शूद्रों द्वारा बनाये भोजन को खाते हों, उनके घरों में प्रवेश करो। जो मद्यपान में रत हों, जो माँस भक्षी हों, जो दूसरों की स्त्रियों का सतीत्व नष्ट करने में लगे हों, उनके घरों में प्रवेश करो।।६६-६८।। उन लोगों के घरों में प्रवेश करो जो दिन में मैथुन (स्त्री से भोग) करते हों। जो पर्वों पर भी पूजापाठ न करते हों, संध्या काल में अपनी पत्नी से मैथुन करते हों। जो कुत्तों की तरह और पशुओं की भाँति पीठ पर से मैथुन करते हों, या जल में मैथुन करते हों, उनके घरों में पत्नी सहित प्रवेश करो। जो अधम पुरुष रजस्वला स्त्री से, चाण्डाली से मैथुन करता हो, जो कन्या के साथ मैथुन करे या गोशाला में मैथुन करे उसके घर में प्रवेश करो। अधिक कहने का क्या प्रयोजन? उनके घरों में प्रवेश करो जो नित्य कर्म (संध्या पूजा आदि) न करते हों या रुद्र

की भक्ति से विहीन हैं, उनके घरों में प्रवेश करो। जो बनावटी (कृत्रिम) लिंग से, साधारण या दिव्य औषधियों को अपने लिंग पर चुपड़कर मैथुन करते हों, उनके घरों में प्रवेश करो।।६९-७५।।

सूत बोले

ऐसा कहकर श्रीमान मुनि ब्रह्मर्षि अपने नेत्रों को पोंछकर वहीं अन्तर्ध्यान हो गये। दुःसह भी उपरोक्त स्थानों को चले गये। श्रेष्ठ मुनि ज्येष्ठा के साथ विशेष रूप से उन घरों को गये जहाँ पर भगवान विष्णु की निन्दा में लोग लगे हुये थे। यह वह देवी है जिसको ज्येष्ठा के नाम से जाना जाता है।।७६।। एक बार दुःसह ने उससे कहा। तुम इस तालाब के किनारे इस कुटी में रहो। मैं पाताल लोक में प्रवेश करूँगा। वहाँ दोनों के रहने योग्य निवास की तलाश करके फिर तुम्हारे पास लौटूँगा। ऐसा कहने पर ज्येष्ठा ने कहा, "मैं यहाँ क्या खाऊँगी? मुझको यहाँ कौन भोजन देगा?" उसके वैसा कहने पर मुनि ने कहा।।७७-७८।। उन स्त्रियों के घरों में तुम मत प्रवेश करना जो तुमको भोजन के साथ धूप, पुष्प और सुगंधित धूप से पूजा करती हैं। इतना कहकर मुनि एक बिल के रास्ते से पाताल लोक में चले गये। वहाँ पर मुनि आज भी जल के स्तर में रहते हैं। अशुभता की देवी ज्येष्ठा गाँवों और पर्वतों के बाहर नित्य रहती हैं।।७९-८१।। प्रसंग वश अकस्मात् देवेश त्रिलोकीनाथ भगवान् विष्णु लक्ष्मी के साथ थे। उनको उसने (अलक्ष्मी ने) देखा और भगवान् जनार्दन विष्णु से कहा, "हे महाबाहु! मेरे पति मुझको छोड़कर बिल मार्ग से पाताल चले गये। मैं अनाथ हूँ। हे विश्वेश्वर! आप को प्रणाम। आप मुझको वृत्ति (भोजन आदि का साधन) दीजिये"।।८२-८३।।

विष्णु बोले

"जो निष्पाप रुद्र शर्व, शंकर, नीललोहित, शिव और जगत की माता हैमवती (पर्वती) और मेरे भक्तों की चिन्ता न करते हैं, जो महादेव की निन्दा करके मेरी पूजा करते हैं उनका वित्त तो तुम्हारा ही हैं। जिसकी पूजा से मैं और ब्रह्मा सदा अस्तित्व में हैं। ऐसे अभागे, मूढ़ मेरे भक्तों का धन भी तुम्हारा है। जो मुझसे विद्वेष करके मेरी निन्दा करते हों, मेरी भक्ति न करते हों, मेरी पूजा भक्त की तरह न करते हों वे मेरे भक्त नहीं हैं। उनका धन-धान, खेत-बारी, उनके द्वारा किये गये शुभ कार्य भी तुम्हारा ही है। कूप, तालाब आदि का खनन भी तुम्हारा ही है"॥८४-८८॥

सूत बोले

ऐसा कहकर भगवान विष्णु लक्ष्मी सहित वहाँ से चले गये। तब विष्णु ने अलक्ष्मी के नाश के लिए भगवान रुद्र का जाप किया। तब से विष्णु भक्तों के द्वारा सदा उस अलक्ष्मी को बलि दी जाती है। हे ब्राह्मणों! स्त्रियों द्वारा अनेक प्रकार की बलि देकर अलक्ष्मी की पूजा करनी चाहिये। वह जो कि इस अलक्ष्मी कथानक को पढ़ता है, सुनता है या उत्तम ब्राह्मणें को सुनाता है वह पाप से निष्पाप होकर लक्ष्मीवान होता है और मोक्ष को प्राप्त करता है॥८९-९२॥

श्रीलिंगमहापुराण के उत्तर भाग में अलक्ष्मी का कथानक
(उत्पत्ति और क्रियाकलाप) नामक छठवाँ अध्याय समाप्त॥६॥